P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्राचीन हरियाणा प्रदेश की राजनीति में गणतन्त्रात्मक व्यवस्था का विकास

कविता देवी
सहायक प्रवक्ता,
राजनीति शास्त्र विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय
गुरुकुल,
मोर माजरा, करनाल

सारांश

भारतीय गणतन्त्र में, एक अलग राज्य के रूप में हरियाणा की स्थापना यद्यपि 1 नवम्बर, 1966 को हुई किन्तु एक विशिष्ट ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक इकाई के रूप में हरियाणा का अस्तित्व प्राचीन काल से मान्य रहा है, यह राज्य आदि काल से ही भारतीय संस्कृति, राजनीति और सभ्यता की धुरी रहा है। मनु के अनुसार इस प्रदेश का अस्तित्व देवताओं से हुआ था, इसलिए इसे ब्रह्मवर्त का नाम दिया गया था। इस प्रदेश में रोमन और ग्रीक गण परम्पराओं से भी अधिक सुव्यवस्थित गण व्यवस्था रही है। इस प्रदेश में सबल गणतन्त्रात्मक व्यवस्था के चिन्ह् वैदिक काल की सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था से ही परिलक्षित होने लगते हैं, यह राज्य वैदिक सभ्यता और सिन्धु घाटी सभ्यता का मुख्य निवास स्थान रहा है। इस क्षेत्र में विभिन्न निर्णायक लड़ाईयाँ भी लड़ी गई जिनमें भारत का अधिकतर इतिहास समाहित है। इसमें महाभारत का युद्ध तथा पानीपत की लड़ाईयाँ प्रमुख हैं। इतिहास में इस राज्य की भूमिका मुगलों के भारत आने और दिल्ली को देश राजधानी बनाने तक रही है। यहाँ के लोगों में जन–जागृति देखने को मिलती हैं। अधिकांश समाज की राजनैतिक गतिविधियों में भूमिका किसी ना किसी रूप में देखने को अवश्य मिल जाती है। यहाँ पर राजनीतिक सामाजिकरण पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत के रूप में निरन्तर गतिशील रहा है। प्रजातान्त्रिक संस्थाओं की जड़े गहरे में जमी हुई हैं। इन संस्थाओं के विकास के चिन्ह् हमें वैदिक सभ्यता व उत्तरोतर व्यवस्थाओं में देखने को मिल जाते है।

मुख्य शब्द : गणतन्त्रात्मक व्यवस्था, बौद्विक सभ्यता, सुदृढ़प्रशासन सामाजीकरण, गणाधिपति, जनपद।

प्रस्तावना

ब्रिटिश भारत में हरियाणा पंजाब राज्य का अंग था, स्वतन्त्रता के बाद भी 1966 तक यह पंजाब राज्य का ही हिस्सा बना रहा परन्तु 1 नवम्बर, 1966 को इसे अलग राज्य के रूप में पहचान मिली। वर्तमान में खाद्यान्न और दुग्ध उत्पादन में हरियाण देश में प्रमुख राज्य है। यहाँ की जनता की गणतान्त्रिक संस्थाओं के प्रति गहरी आस्था है। पुरातत्वेत्ताओं के अनुसार औद्योतिहासिक कालीन प्राग्हड़प्पा, हड़प्पा, परवर्ती हड़प्पा आदि अनेक संस्कृतियों के अनेक प्रमाण हरियाणा के बणवाली, सीसवाल, कुणाल, मिर्जापुर, दौलतपुर और भगवानपुरा आदि स्थानों के उत्खन्नों से प्राप्त हुए हैं। यह राज्य वैदिक सभ्यता और सिन्धु घाटी सभ्यता का मुख्य निवास स्थान रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. हरियाणा प्रदेश की प्राचीन व्यवस्थाओं में गणतन्त्रात्मक व्यवस्था के चिन्हों का अध्ययन करना।
2. हरियाणा प्रदेश की प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक राजनीति के इतिहास का अध्ययन करना।
3. हरियाणा क्षेत्र में प्राचीन समय की प्रशासनिक व्यवस्था व गण परम्पराओं की समीक्षा करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में हरियाणा क्षेत्र की प्राचीन सभ्यताओं से लेकर आधुनिक व्यवस्था तक प्रचलित गणतन्त्रात्मक व्यवस्था के विकास का ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

साहित्यावलोकन

के0सी0 यादव ने अपनी पुस्तक "हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति" में हरियाणा राज्य के गौरवशाली इतिहास की विश्लेषणात्मक व्यवस्था की है।

सुजीत कुमार ने अपनी पुस्तक "प्राचीन भारत की शासन पद्वति (2014)" में प्राचीन काल में स्थापित व्यवस्थाओं का उल्लेख किया है। अपने अध्ययन में उन्होंने वैदिक व अन्य कालों की शासन पद्धतियों की विश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की है।

डा0 हेत सिंह बधेला ने अपनी पुस्तक "उत्तरी भारत का इतिहास (2015)" में भारत के प्राचीन गौरवमयी इतिहास का विस्तृत व गहन अध्ययन प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया है कि उत्तर भारत में कैसी व्यवस्थाएं रही है।

डा0 विपिन कुमार मिश्रा ने अपनी पुस्तक "भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास (2015)" में भारतीय प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का विस्तृत उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया है कि प्राचीन भारतीय सभ्यता कितनी सुदृढ़ और सुव्यवस्थित थी।

प्राचीन व्यवस्थाएं

सिंधु धाटी सभ्यता

हरियाणा के विषय में वैदिक साहित्य में अनेक उल्लेख मिलते हैं, इस प्रदेश में की गई खुदाईयों से यह ज्ञात होता है कि सिन्धु घाटी सभ्यता और मोहनजोदड़ों संस्कृति का विकास यहीं पर हुआ था। हरियाणा का वैदिक काल से ही गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। यह राज्य भरतवंश के शासकों का स्थान रहा है, जिनके नाम पर देश को भारत का नाम दिया गया। महाभारत में भी इस राज्य का उल्लेख मिलता है। कुरुक्षेत्र, जहाँ कौरवों व पाण्डवों के बीच महाभारत का युद्ध हुआ, इसी राज्य में स्थित है। इतिहास में इस राज्य की प्रमुख भूमिका मुगलों की शासन व्यवस्थाओं में भी रही है। भगवान श्री कृष्ण ने भी यहीं पर गीता का उपदेश दिया था। मनु स्मृति के अनुसार मनु राजा जिनसे मानव जाति का आरम्भ हुआ, ऐसा माना जाता है कि वो यहीं के राजा थे।

वैदिक काल

वैदिक काल के आरम्भ के साथ ही हरियाणा का इतिहास जुड़ा हुआ है। हरियाणा को ब्रह्मवर्त भी कहा जाता था, इसका उल्लेख कई वेदों में देखने को मिलता है। भारतवंशी आर्य जिनके नाम पर भारत का नाम पड़ा अपने राज्य को यही पर सबसे पहले स्थापित किया और बाद में पूरे भारत पर राज्य किया। शास्त्रवेताओं, पुराण रचियताओं एवं विचारकों ने लम्बे समय तक इस ब्रह्मर्षि प्रदेश की मनोरम गोद में बैठकर ज्ञान का प्रसार अनेक धर्म ग्रन्थ लिखकर किया। उन्होंने माँ सरस्वती और पावन ब्रह्मवर्त का गुणगान अपनी रचनाओं में किया। यहाँ के गुरुग्राम का नाम भी गुरु द्रोणाचार्य के नाम पर पड़ा है। ऐसी कथा प्रसिद्ध है कि जो कोई भी यहाँ बसने के लिए आता था उसकी यहाँ के नागरिक सहायता करते थे ताकि वह अपना व्यवसाय कर सके। इस राज्य को उत्तरवेदी के नाम से भी पुकारा गया है। इस राज्य को आदिसृष्टि का जन्म स्थान भी माना जाता है।

इस प्रदेश में आर्यो की शक्ति को संगठित करने में भारतवंशी सुदास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये संगठित भारतवंशी आर्य देखते–देखते पूर्व और अन्य दिशाओं में अपनी शक्ति का विस्तार करते चले गए। इन्हीं भारत वंशियों के नाम पर कालान्तर में पूरे राष्ट्र का नाम भारत पड़ा। इनकी शक्ति के विस्तार का कारण सुदृढ़ राजनैतिक संगठन था। प्रभावशाली सैनिक शक्ति राजनीतिक दृढ़ता का ही परिणाम थी।

महाभारतकालीन इतिहास

महाभारतकालीन इतिहास से जानकारी मिली है कि आर्यवंशी कौरवों ने इस क्षेत्र को कृषि योग्य बनाया था, पौराणिक कथाओं के अनुसार आदिरूपा माँ सरस्वती के 48 कोस के उपजाऊ प्रदेश को पहले–पहल कृषि योग्य बनाया। इसी कारण इस प्रदेश का नाम कुरुक्षेत्र पड़ा। आज भी यह कुरूक्षेत्र की भूमि भारतीय संस्कृति का पवित्र प्रदेश मानी जाती है। यहाँ कालान्तर में जो महाभारत का युद्ध हुआ उसमें युग पुरुष श्रीकृष्ण के द्वारा गीता का जो उपदेश दिया गया उसके लिए भारतीय संस्कृति तथा आगामी पीढ़ियाँ ऋणी रहेंगी। गीता में वर्णित श्लोकों में राजनैतिक क्रियाकलापों का भली–भाँति परिचय मिलता है। इस समय राजा को कार्यकलापों में सहयोग देने के राजनीतिज्ञों व मन्त्रियों की सुदृढ़ व्यवस्था की गई थी। प्रशासनिक ढाँचा सुसंगठित था। परन्तु अन्तिम निर्णय की शक्ति राजा के पास ही थी। महाभारत काल के बाद एक ऐसा युग शुरू हुआ जिसके ऐतिहासिक यथार्थ का ओर–छोर नहीं मिलता। परन्तु इस क्षेत्र के आर्यकुल अपनी आर्य परम्पराओं को अक्षुण्ण रखते हुए बाहर के आक्रांताओं से टकराते रहे। सम्पूर्ण कुरु–प्रदेश गणों और जनपदों में बंटा हुआ था। बीच के समय के कुछ ऐसे चिन्ह् भी मिले है जिसमें राजा के नाम का उल्लेख न होकर गणाधिपति शब्द का संकेत दिया गया है। ऐसा उल्लेख मिलता है कि गणाधिपति की उपाधि दी जाती थी। इस समय सेनापति का भी चुनाव हुआ करता था जिसे 'इन्दु' कहा जाता था। कालांतर तक यही व्यवस्था चलती रही। इन गणों और जनपदों ने सदैव तलवार के बल पर अपने गौरव को बनाए रखा।

जनपद एवं गणसंघ की व्यवस्था

आर्य काल से ही यहाँ के जनमानस ने गणपरम्पराओं को अपनाने में अहम् भूमिका निभाई है। इस समय उच्च पदों पर बैठे व्यक्तियों द्वारा जनपद के लोगों की जनभावनाओं को पूरा आदर व महत्व दिया जाता था। जनपद के जनमानस की विचारधारा से विपरीत जाने से परहेज किया जाता था। गाँव के एक समूल को वो जनपद कहते थे। जिसका प्रबन्ध अथवा शासन व्यवस्था निर्वाचित प्रतिनिधि संभालते थे। कई घाटी जनपदों को मिलाकर एक बड़ी जनपद का निर्माण किया जाता था। कई जनपद मिलकर अपना एक 'गण' स्थापित करते थे। 'गण' एक सुव्यवस्थित राजनैतिक इकाई का रूप ले लेता था। इस समय गणसभा की भी स्थापना की गई थी। गणसभा में एक तरह से जनता के प्रतिनिधि भेजे जाते थे। ये व्यक्ति अपने–अपने प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करते हुए उनके हितों का पूरा ध्यान रखते थे। इस बात का उल्लेख मिलता है कि इस तरह के कई 'गण' मिलकर एक 'संघ' का निर्माण करते थे। यौधेय काल में इसी तरह के कई गणराज्यों के संगठन से एक विशाल 'गणसंघ' का निर्माण किया जाता था। जो शतुद्रु से लेकर गंगा तक के भू–भाग पर राज्य करता था। इस समय वर्तमान की तरह सुसंगठित राज्य प्रबन्ध की व्यवस्था के चिन्ह् स्पष्ट मिलते

है। इस समय केवल राजनैतिक व्यवस्था ही सुसंगठित नहीं थी बल्कि सामाजिक जीवन में भी एक अनूठी व्यवस्था स्थापित की गई थी। पूरे देश में जब गणराज्यों की यह परम्परा साम्राज्यवादी शक्तियों के दबाव से समाप्त हो गई तब भी हरियाणा प्रदेश के जनमानस ने इसे सहेजे रखा। यहाँ के जन–जीवन में तथा स्थानीय क्रियाकलापों में राजनैतिक परिवर्तनों का बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ा।

हर्षवर्धन काल

जब भारत में हुणों का साम्राज्य फैला हुआ था तब उनको हराकर हर्षवर्धन ने अपना राज्य स्थापित किया और कुरुक्षेत्र के पास ही अपनी राजधानी बनाई जिसे थानेसर कहा जाने लगा। उसके बाद प्रतिहारों ने राज्य किया और कन्नौज को अपनी राजधानी बना लिया। इनकी गण परम्परा को शासकों ने भी सदा मान्यता दी। हर्षकाल से लेकर मुगल काल के अंत तक यहाँ सर्वोच्च पंचायत को शासन की और से महत्त्व दिया जाता रहा। पुराने दस्तावेजों से पता चलता है कि मुगल शासकों की तरफ से सर्वखाप पंचायत के प्रमुख को 'वजीर' की पदवी दी जाती थी और पंचायतों के फैसलों को पूरी मान्यता मिलती थी। मुगलकाल में जनपदों का स्थान खापों ने ले लिया था। सर्वखाप पंचायत की सत्ता को सतलुज से गंगा तक मान्यता प्राप्त थी। इस प्रदेश में रोमन और ग्रीक गण परम्पराओं से भी कहीं अधिक सुव्यवस्थित गण व्यवस्था रही है।

बौद्धकालीन राजनैतिक व्यवस्था

बौद्धकालीन राजनैतिक व्यवस्था में भी सोलह महाजनपदों की चर्चा बौद्ध साहित्य में विस्तारपूर्वक हुई है। इनमें कुरू, पांचाल, सूरसेन अवंती, वज्जी, कौशल, अंग, मतल आदि जनपदों का उल्लेख हुआ है। आधुनिक हरियाणा के भाग से समय कुरू और पांचाल महाजनपदों के भाग थे । यौधेय काल के अन्तर्गत मलयुद्ध और युद्ध कौशल में इस प्रदेश के लोगों का जवाब नहीं था। यह गर्व की बात है कि पूरे एक हजार वर्ष तक के इस गणराज्य ने भारत के इतिहास में अपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त की और अपने प्रदेश को गणतन्त्रात्मक राजनैतिक व्यवस्था के अधीन चरम विकास तक पहुँचाया। हर्ष काल में भी यह पूरा प्रदेश अनेक जनपदों में बंटा हुआ था। इस काल में जनपदों और गणों की यह परंपरा यहाँ राजनैतिक व्यवस्था का आधार बनी रही। सम्राट ने कभी यहाँ की आन्तरिक व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं किया। गाँव के एक समूह को प्रशासन की व्यवस्था की सारी जिम्मेदारी सौंपी हुई थी। राजा हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् यहाँ का जन–जीवन बाहरी आक्रमणों से अस्त–व्यस्त हो गया था। परन्तु लोगों ने अपनी शक्ति से आन्तरिक सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखा। 12वीं व तेरहवीं शताब्दी में मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा यहाँ की व्यवस्था को छिन्न–भिन्न कर दिया गया। 14वीं शताब्दी के दौरान फिर देशी रजवाड़ों के द्वारा व्यवस्था को संगठित करने के प्रयास किए जाते रहे। 15वीं शताब्दी के दौरान भी राजपूत शासकों द्वारा इस प्रदेश में व्यवस्था स्थापित करने के प्रयास किए जाते रहे।

उत्तरोत्तर व्यवस्था

मुगल शासक बाबर के समय राजनैतिक दृष्टि से भारत की तत्कालीन स्थिति बड़ी दयनीय थी। संपूर्ण देश छोटे–छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। मुगल शासकों के द्वारा यहाँ की गणतन्त्रात्मक व्यवस्थाओं को छिन्न–भिन्न कर दिया गया।

हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार किए गए। यहाँ की जनता पर भारी कर लगा दिए गए। 18वीं शताब्दी में इस प्रदेश के कुछ हिस्सों पर मराठों द्वारा आधिपत्य जमा लिया गया परन्तु 19वीं शताब्दी के आरम्भ में ही हरियाणा के प्रदेशों पर अग्रेजों का आधिपत्य स्थापित हो गया था जिसके परिणामस्वरूप गणतन्त्रवादी व्यवस्था को दबा लिया गया। राजनैतिक व्यवस्था पर पूर्ण अधिपत्य भले ही अंग्रेज सरकार का था परन्तु गाँव की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका पंचों की रहती थी, गाँवों की महत्त्वपूर्ण समस्याएँ पंचायत व खाप पंचायतों के द्वारा सुलझा ली जाती थी। प्राचीन हरियाणा की सबल गण परम्परा के फलस्वरूप ही यहाँ के लोग जनवादी बने रहे। कालान्तर में उन्होंने उस साम्राज्यवादी शक्ति से टक्कर ली जिन्होंने उनकी जनवादी व्यवस्था में हस्ताक्षेप किया था।

निष्कर्ष

हरियाणा के प्राचीन काल के राजनीतिक इतिहास के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि यहां गणतंत्रात्मक व्यवस्था के चिन्ह् प्रारम्भ से ही प्रशासनिक व्यवस्थाओं के मूल में रहे हैं चाहे सिन्धु घाटी की सभ्यता रही हो या वैदिक सभ्यता या फिर उत्तरोतर काल की विभिन्न व्यवस्थाएं। सभी में जन इच्छाओं को मान्यता दी जाती रही है। हालांकि अनेकों बार व्यवस्थाओं में उतार चढाव देखने को मिले है और गणवादी भावनाएं छिन्न भिन्न हुई है, परन्तु इसका कारण विदेशी आक्रमण व बाहरी शासकों का आगमन रहा है, जिन्होंने अपनी दमनकारी नीतियों से जनमानस की इच्छाओं को कुचलने का प्रयास किया था। विदेशी शासकों के द्वारा ही यहॉ की जन प्रतिनिध भावनाओं को ठेस पहुंचाई गई है। जबकि यहाँ के राजाओं का गणतन्त्रात्मक परम्पराओं को विकसित करने में योगदान रहा है। यहां के जनमानस में भी गणतन्त्रात्मक परम्पराओं के प्रति लगाव रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *D.C. Verma, Haryana, New Delhi : National Book Trust, 1977*
2. *K.C. Yadav, Haryana : Itihas and Sanskriti, New Delhi, Manohar Publication House, 1982*
3. *K.K. Aggrwals, Haryana's Glorious Past Haryana Review, Vol. 15, Nov. 1981*
4. *Mohan, Raman, "Political Vacuum in Bhiwani Constituency, Tribune India, Retrieved 23 April, 2014.*
5. *S.S. Chahar, Dynamics of Electoral Politics in Haryana, Sanjay Parkashan, 2004*
6. *Haryana Down the Ages, History of Haryana, www.google.com*
7. *Muni Lal,Haryana : On High Road to Prosperity, Delhi, Vikas Publishing House, 1974*
8. *विपिन कुमार मिश्र, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास (2015), दिल्ली आर्य पब्लिकेशन।*
9. *सुजीत कुमार, प्राचीन भारत की शासन पद्वति (2014), नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर नई दिल्ली।*